

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 09 September 2026

घने कोहरे के कारण तहेपुर में नहीं उतर सका पीएम का हेलिकॉप्टर, प्रधानमंत्री मोदी ने वर्चुअल माध्यम से जनसभा को किया संबोधित

Sanket Morankar

Published on 20 Dec 2025



पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के तहेपुर में शनिवार (20 दिसंबर 2025) को उस समय असामान्य स्थिति उत्पन्न हो गई, जब घने कोहरे और बेहद कम दृश्यता के कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हेलिकॉप्टर निर्धारित स्थल पर लैंड नहीं कर सका। सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखते हुए पायलट ने हेलिकॉप्टर को वापस कोलकाता एयरपोर्ट ले जाने का फैसला किया। हालांकि मौसम की बाधा के बावजूद प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम रद्द नहीं किया और तहेपुर के नेताजी पार्क में आयोजित जनसभा को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया।

जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी सुबह करीब 10:40 बजे कोलकाता पहुंचे थे, जहां से उन्हें हेलिकॉप्टर द्वारा नदिया जिले के तहेपुर जाना था। तहेपुर में उनका प्रशासनिक कार्यक्रम निर्धारित था, जिसमें पश्चिम बंगाल में कई राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास शामिल था। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी की राजनीतिक रैली 'परिवर्तन संकल्प सभा' को संबोधित करने का कार्यक्रम तय था।

जब प्रधानमंत्री का हेलिकॉप्टर तहेपुर हेलिपैड के ऊपर पहुंचा, तो वहां घना कोहरा छाया हुआ था। दृश्यता इतनी कम थी कि सुरक्षित लैंडिंग संभव नहीं हो सकी। हेलिकॉप्टर कुछ समय तक हेलिपैड के ऊपर मंडराता रहा, लेकिन हालात अनुकूल न होने के कारण पायलट ने यू-टर्न लेते हुए हेलिकॉप्टर को कोलकाता एयरपोर्ट वापस ले जाने का निर्णय लिया। अधिकारियों के मुताबिक, यह फैसला पूरी तरह सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत लिया गया।

कोलकाता लौटने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तहेपुर में मौजूद हजारों लोगों को निराश नहीं होने दिया और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए रैली को संबोधित किया। अपने संबोधन की शुरुआत में प्रधानमंत्री ने जनता से क्षमा मांगते हुए कहा, "मुझे खेद है कि खराब मौसम के कारण मैं बंगाल के नदिया में आप लोगों के बीच नहीं पहुंच सका।" उन्होंने कहा कि मौसम और सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता, लेकिन जनता से संवाद हर हाल में जारी रहेगा।

अपने भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने राजनीतिक मुद्दों पर भी खुलकर बात की। उन्होंने हाल ही में हुए बिहार विधानसभा चुनावों का जिक्र करते हुए कहा कि बिहार की जनता ने एनडीए को भारी जनादेश दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा, “बिहार ने जंगलराज को नकार दिया है। गंगा बिहार से बंगाल की ओर बहती है और अब समय आ गया है कि पश्चिम बंगाल की जनता भी यहां व्याप्त ‘महा-जंगलराज’ से मुक्ति पाए।” उनके इस बयान पर रैली स्थल पर मौजूद समर्थकों ने जोरदार प्रतिक्रिया दी।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में पश्चिम बंगाल के विकास, कानून-व्यवस्था और केंद्र सरकार की योजनाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार राज्य के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और आने वाले समय में पश्चिम बंगाल को बुनियादी ढांचे और रोजगार के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक ले जाया जाएगा। प्रधानमंत्री ने जनता से आगामी चुनावों में बदलाव के लिए एकजुट होने का आह्वान भी किया।

इस बीच, तहेपुर के नेताजी पार्क में आयोजित रैली स्थल पर भारी भीड़ उमड़ पड़ी। कार्यक्रम स्थल की क्षमता से अधिक लोग पहुंच गए, जिससे कुछ समय के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया। बताया गया कि भीड़ ने धैर्य खोते हुए वीआईपी प्रवेश द्वार को तोड़ने की कोशिश की और सुरक्षा बलों द्वारा लगाए गए बैरिकेड्स को भी हटाने का प्रयास किया। स्थिति को संभालने में जिला पुलिस और प्रशासन को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त बल तैनात किया गया और लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की गई। स्थिति को जल्द ही काबू में कर लिया गया और किसी बड़ी अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली। प्रशासन ने स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसी कारण सभी आवश्यक कदम उठाए गए।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी का शनिवार का कार्यक्रम काफी व्यस्त था। पश्चिम बंगाल के बाद उन्हें असम के गुवाहाटी के लिए रवाना होना था, जहां वे दो दिवसीय दौरे पर कई कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले हैं। मौसम की बाधा के बावजूद उनके कार्यक्रम में बड़े बदलाव नहीं किए गए और डिजिटल माध्यम के जरिए जनता से संवाद सुनिश्चित किया गया।

कुल मिलाकर, तहेपुर में खराब मौसम और घने कोहरे ने प्रधानमंत्री के दौरे में बाधा जरूर डाली, लेकिन तकनीक के सहारे उन्होंने अपना संदेश जनता तक पहुंचाया। यह घटना एक बार फिर दिखाती है कि आधुनिक दौर में मौसम या भौगोलिक बाधाएं भी जनसंवाद को पूरी तरह रोक नहीं सकतीं। प्रधानमंत्री का वर्चुअल संबोधन न सिर्फ सुरक्षा के प्रति सतर्कता का उदाहरण बना, बल्कि यह भी दर्शाता है कि राजनीतिक संवाद के नए माध्यम किस तरह प्रभावी साबित हो रहे हैं।